अहिंसा विश्व भारती के स्थापना दिवस समारोह के अवसर पर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में महामहिम राज्यपाल, बिहार श्री राम नाथ कोविन्द का संबोधन

(दिनांक–28.04.2017, समय–पूर्वाह्न–11:00 बजे, स्थान–मातुश्री बिड़ला सभागार, मुम्बई)

अहिंसा विश्व भारती के स्थापना–दिवस–समारोह के अवसर पर प्रमुख रूप से उपस्थित संस्था के अध्यक्ष आदरणीय आचार्य डॉ॰ लोकेश मुनि जी, आदरणीय श्री श्री रविशंकर जी, केन्द्रीय मंत्री श्री रामदास अठावले जी, आदरणीय रमेश भाई ओझा जी, आदरणीय इमाम उमेर अहमद इलियासी जी, आदरणीय दादा जे॰पी॰ वासवानी जी, आदरणीय गुरूवचन सिंह जी, आदरणीय बौद्ध भिक्षु रिम्पोचे जी, आदरणीय विशप जी, आदरणीया ब्रह्मकुमारी डॉ॰ बिन्नी सरीन जी, कार्यक्रम में उपस्थित अतिथिगण, विभिन्न धर्मानुरागी, महानुभावों, मीडिया–प्रतिनिधिगण, देवियों एवं सज्जनों!

अहिंसा विश्व भारती संस्था द्वारा आयोजित ''सर्वधर्म संवाद'' के द्वारा विश्व शांति व सद्भावना विषयक इस राष्ट्रीय सेमिनार के कार्यक्रम में उपस्थित होना मेरे लिए अत्यन्त प्रसन्नता की बात है। सभी धर्मों के आचार्यों और धर्मोपदेशकों के बीच ऐसे कार्यक्रम में शामिल होना मैं अपना सौभाग्य मानता हूँ।

देवियों एवं सज्जनों, आज की इस राष्ट्रीय संगोष्ठी का केन्द्रीय विषय –''सर्वधर्म संवाद के द्वारा विश्वशांति व सद्भावना'' अत्यन्त व्यापक और समीचीन है। जब हम 'सर्वधर्म' की बात करते हैं, तो सबसे पहले इसपर विचार करना होगा कि आखिर 'धर्म क्या है? भारतीय वांगमय में धर्म की अनेकानेक

परिभाषाएँ दी गई हैं। किन्तु इनमें सबसे छोटी, सहज और सर्वग्राह्य परिभाषा यह बताई गई है कि जो धारण करने योग्य है, वही धर्म है –'धारयेति इति धर्मः।' सवाल उठता है कि धारण योग्य क्या है? उत्तर है –जो मानव के लिए कल्याणकारी है और जो 'सत्यम्' 'शिवम' और 'सुन्दरम' का समागम है, वही धर्म है। हमारी संस्कृति में सत्यम्, शिवम और सुन्दरम् की परिकल्पना की गई है। इसी के अनुरूप मानव–जीवन का भी लक्ष्य है –सत्य का अनुगमन करना और सत्य की सदैव रक्षा करना। 'शिवम्' अर्थात् आनंदप्रद और सबके लिए सर्वदा कल्याणकारी। और 'सुन्दरम्' –अर्थात् सौन्दर्यपूर्ण, सुखावह और सृजनमूलक। सभी धर्म इसी सत्य, शिव और सुन्दर की उपासना, उसकी खोज और उसके अनुगमन का ही रास्ता बताते हैं। जब हम सर्वधर्म की बात करते हैं, तो इससे विभिन्न धर्मों की इसी आन्तरिक समरूपता का बोध होता है। कोई धर्म नहीं, जो सच्चाई के रास्ते से अलग किसी दूसरे रास्ते पर चलने की बात करता हो, कोई ऐसा धर्म नहीं, जो सबके हितों से अलग हटकर सिर्फ स्वार्थ–सिद्धि की कामना को मानव जीवन का लक्ष्य बताता हो, कोई ऐसा धर्म नहीं जो सौन्दर्यपूर्ण और सृजनमूलक जीवन–दृष्टि से इतर किसी मार्ग को सार्थक बतलाता हो।

यहाँ सवाल उठता है कि जब सभी धर्म मानवीय हित, मानवीय कल्याण को ही अपना ध्येय और लक्ष्य मानते हैं, तो फिर इनके बीच पारस्परिक संवाद का कोई माध्यम या मंच होना चाहिए या नहीं। मैं समझता हूँ, आज का यह आयोजन इसी दिशा में एक सार्थक और ठोस पहल है। सर्वधर्म संवाद कायम रखना आज इसलिए भी जरूरी है, ताकि हम न केवल

एक–दूसरे की समस्याओं और विसंगतियों पर नजर रख सकें, बल्कि यह इसलिए भी जरूरी है कि हम एक–दूसरे की खूबियों को भी अपने स्वीकार्य धर्म में समाहित कर सकें। धर्म –चाहे हम हिन्दू धर्म की बात करें, या इस्लाम, ईसाई या सिख धर्म की। अपने मूल रूप में सभी धर्मों का सार एक है। बाह्याचार, बाह्याडंबर, भौतिकतावाद और बाजारवाद के प्रकोप आदि के कारण, जो भी विसंगति किसी धर्म में नजर आ रही है, उसके निराकरण पर खुली एवं स्वस्थ चर्चा होनी चाहिए।

वैदिक ऋचा कहती है –''माता भूमिःपुत्रोऽहं पृथिव्याः।'' अर्थात् यह संपूर्ण धरती हमारी माँ है और हम सभी इसके पुत्र। 'सुजलां सुफलां शस्य श्यामलां' इस धरती माता की वंदना करते हुए जब हम 'वंदेमातरम्' गाते हैं, तो यह धरती पर बसने वाली सम्पूर्ण मानवता का अभिवंदन होता है। हमारी भारतीय संस्कृति और परम्परा में सबके कल्याण की कामना करते हुए कहा गया है–

''सर्वे भवन्तु सुखिनः
सर्वे सन्तु निरामया।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु,
मा कश्चिद् दुःख भागभवेत्।।''

–अर्थात् ''सभी सुखी हों, सभी रोगमुक्त रहें, सभी मंगलमय घटनाओं के साक्षी बनें तथा किसी को भी दुःख का भागी नहीं बनना पड़े।'' आप सोच सकते हैं, हिन्दू धर्म– शास्त्रों में की गई यह मंगलकामना यहाँ क्या सिर्फ हिन्दुओं मात्र के लिए है? नहीं, यह तो समस्त मानवता के लिए है, चाहे वे किसी भी धर्म को मानने वाले हों।

कोई भी धर्म हो, सभी भाईचारा और प्रेम की ही शिक्षा देते हैं। सभी एक दूसरे के प्रति सम्मान और आदर का भाव रखें, सभी एक दूसरे के लिए त्याग और सहिष्णुता की भावना रखें –इन्हीं सब बातों से देश की एकता को ताकत मिलती है। कोई भी धर्म हो, सभी हमें अच्छा इंसान बनने की शिक्षा देते हैं। एक अच्छा इंसान बनकर ही हम अगर हिन्दू हैं, तो अच्छे हिन्दू बन सकते हैं, अगर मुसलमान हैं, तो अच्छे मुसलमान बन सकते हैं। भारत एक ऐसा देश है, जहाँ सभी धर्मों के लोग रहते हैं। सभी धर्मों, सभी जातियों, सभी संस्कृतियों के सुन्दर सम्मिलन से ही भारत की सांस्कृतिक और राष्ट्रीय पहचान और विरासत समृद्ध होती है। 'विविधता के बीच एकता' –हमारे देश की यही विशेषता है। हमारे देश का संविधान भी सामाजिक समरसता और राष्ट्रीय एकता की मूल अवधारणा पर जोर देता है। बाबा साहब डॉ॰ भीमराव अम्बेदकर जी द्वारा सृजित 'भारतीय संविधान' एक मर्यादा–ग्रन्थ है। इसकी 'प्रस्तावना' में ही वह मंत्र दिया गया है, जिससे अनुशासित और नियंत्रित होकर हम एक गौरवशाली देश के आदर्श नागरिक बन सकते हैं। हमारे देश की 'धर्मनिरपेक्षता' का मतलब यही है कि हम सभी एक दूसरे के धर्मों के प्रति आदर और सम्मान का भाव रखते हैं।

सज्जनों, हम आज यहाँ जिस सर्वधर्म संवाद की बात कर रहे हैं, उसका अभिप्राय यही है कि हम एक–दूसरे की समस्या को समझें, एक–दूसरे के कष्ट में साथ हों और हर तरह की बातों का समाधान मिल–बैठकर ढूँढें। बौद्ध धर्म में भी 'संगच्छध्वम्, संवदध्वम्' अर्थात् जीवन में समरसता, समवेत स्वर और वैचारिक सामंजस्य की कामना की गई है।

इस्लाम धर्म के पवित्र ग्रन्थ 'कुरान' में भी कहा गया है कि 'हम ईश्वर और उसके दूतों द्वारा प्रकट की गई वाणी में विश्वास रखते हैं।' बौद्ध धर्म के प्रचारक और महान शासक सम्राट अशोक ने कभी भी किसी अन्य धर्मावलम्बी को किसी प्रकार का कष्ट नहीं दिया। अकबर महान ने भी इस्लाम के प्रचार के लिए कभी भी बाहुबल का प्रयोग नहीं किया। सिख धर्म के दशमेश गुरू गुरू गोबिन्द सिंह जी महाराज ने भी सच्चाई और परोपकार के मार्ग को ही सिख धर्म का सारतत्व बतलाया। कहने का अभिप्राय यह कि सभी धर्मो में कभी कोई वास्तविक मत–विभिन्नता नहीं रही। हमारा संविधान जब हमारे राष्ट्र की धर्मनिरपेक्षता की बात करता है तो उसका अभिप्राय यही है कि हम सभी धर्मों के प्रति समादर का भाव रखेंगे।

आइये, हम सभी मिलकर सर्वधर्म संवाद के इस मंच को, और अधिक सशक्त, सुदृढ़ और गरिमापूर्ण बनाने का संकल्प लें, ताकि विश्वमैत्री का पथ प्रशस्त हो सके। आप सबको बहुत–बहुत धन्यवाद!

जय हिन्द!!

***

प्रस्तुति–जन–सम्पर्क शाखा, राजभवन, पटना।